चतुर्थ अध्याय

जितेन्द्र श्रीवास्तव की कविताओं में अभिव्यक्त भारतीय दाम्पत्य जीवन

चतुर्थ अध्याय

भारतीय समाज में पारिवारिक जीवन सामाजिक जीवन की एक महत्वपूर्ण संस्था है। परिवार ही समाज की नीव है तथा विवाह जैसे संस्कार के बिना परिवार की कल्पना नहीं की जा सकती। विवाह जैसे संस्कारों के माध्यम से ही हिंदू गृहस्थ जीवन में प्रवेश करते हैं। 'गृहस्थाश्रम' भारतीय समाज जीवन में अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। परंपरागत मान्यता है कि दम्पति का शरीर दो होते हुए भी भगवान ने उसे एक ही बनाया है। दाम्पत्य जीवन में आने के बाद मनुष्य अपनी शारीरिक इच्छाओं की पूर्ति करता है। जिस को सामाजिक मान्यता प्राप्त है। दाम्पत्य जीवन का अपना ही एक सुख है जो असीम है। हिंदू समाज का ऐसा कोई शास्त्र और उपनिषद नहीं जो दाम्पत्य जीवन की महत्ता के संबंध में उल्लेख न करता हो। वैदिक युग में दाम्पत्य जीवन की पवित्रता का बड़ा महत्व था। महाभारत, रामायण और आदिपर्व में भी दाम्पत्य संबंधों का उल्लेख प्राप्त होता है। वायु पुराण में गृह जीवन के प्रमुख कर्तव्यों की चर्चा की गई है। भारतीय सामाजिक जीवन में काफी परिवर्तन हुए हैं। दाम्पत्य संबंध इस परिवर्तन से काफी प्रभावित हुआ हैं। अब धीरे-धीरे दाम्पत्य संबंधों की नई मान्यताएं स्थापित होने लगी है। दाम्पत्य जीवन में आए इस परिवर्तन ने समाजक जीवन को एक नया रूप प्रदान किया है। विवाह होने के बाद पति-पत्नी दाम्पत्य जीवन में प्रवेश करते हैं। अग्नि को साक्षी मानकर एक दूसरे का हाथ थामकर जीवन भर साथ निभाने की प्रतिज्ञा करते हैं।

प्राचीन काल में हिंदु धर्म में ४ आश्रमों का सिद्धांत माना गया है। यह ४ आश्रम है- ब्रहमचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। इन चारों आश्रमों में से गृहस्थाश्रम को ही सबसे श्रेष्ठ बताया गया है। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने के लिए विवाह को जरूरी माना गया है। विवाह की प्रथा सामान्यतः जिस रूप में प्रचलित है उसका विकास हुआ है। प्राचीन काल से ही विवाह को सभी जातियों, सभी धर्मों तथा

सभी देशों में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। विवाह को प्रत्येक व्यक्ति का एक महत्वपूर्ण अनिवार्य धार्मिक कर्तव्य समझा गया है। हिंदू धर्म में विवाह को सभी संस्कारों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। हिंदुओं में ऐसा विश्वास है कि मनुष्य इस संसार में 3 ऋणों से दबा हुआ है- ऋषि, देव और पितृ ऋण। पितृ ऋण को विवाह के बिना नहीं उतारा जा सकता क्योंकि माता-पिता ने हमें जन्म दिया है इसीलिए हम हमारे माता-पिता के भी ऋणी है। जैसे हमारे माता पिता ने हमें जन्म दिया वैसे हमें भी विवाह करके संतान के क्रम को आगे चलाना है। इस परंपरा को टूटने नहीं देना है। इस प्रकार विवाह करके संतानोंत्पत्ति करना पितृ ऋण से उऋण होना है। जिस प्रकार मनुष्य सभ्य होता गया और समाज विकासशील अवस्था को प्राप्त करता गया। उसी प्रकार उसने स्त्री-पुरुष संबंधों को विवाह नामक संस्कार में बांधकर नैतिकता का आधार प्रदान किया गया। मनुष्य ने अपनी आवश्यकता अनुसार विवाह संस्थान में परिवर्तन किया है। भारतीय समाज में विवाह को पवित्र बंधन के साथ आस्था तथा धार्मिक कर्तव्य माना गया है। किन्तु पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव, वैज्ञानिक प्रगति और औद्योगिकरण के प्रसार की स्थितियों से विवाह संस्कार का पारंपारिक ढांचा एकदम परिवर्तित हो गया है। वर्तमान समय में उसे एकमात्र सामाजिक समझौता या जीवनसाथी की आवश्यकता समझा जाता है। विवाह मनुष्य जीवन में सद्‌गुणों का विकास करता है। विवाह के बाद पति-पत्नी दोनों में एक दूसरे के प्रति प्रेमभाव के कारण आत्मत्याग की भावना विकसित होती है।

उपर्युक्त मूल्यांकन से यह स्पष्ट होता है कि समाज के नियमों को निभाकर किया हुआ विवाह ही समाज मान्य होता है। विवाह के बाद स्त्री-पुरुष अपना अपना कर्तव्य निभाते हुए गृहस्थ धर्म का पालन करते हैं। सामाजिक जीवन को बनाए रखते हैं।

भारतीय समाज में प्राचीन काल तथा आधुनिक काल में विवाह के भिन्न-भिन्न प्रकार मिलते हैं जैसे कि प्राचीन काल में ब्राह्मण विवाह, देव विवाह, आसुर

विवाह, गांधर्व विवाह, राक्षस विवाह, पैशाच विवाह आदि। आधुनिक समाज में विवाह की दो प्रमुख प्रथाएं प्रचलित है- एक परंपरागत भारतीय पद्धति है जिसमें लड़के और लड़कियों को अपने माता-पिता की इच्छा अनुसार विवाह करना होता है। इस पद्धति में लड़के और लड़कियों को अपना जीवनसाथी चयन करने की स्वतंत्रता नहीं होती। दूसरी विवाह पद्धति पश्चिमी संस्कृति से निर्मित है, जिसमें लड़के और लड़कियों को अपना जीवनसाथी चयन करने की स्वतंत्रता होती है। आज समाज में प्रेम विवाह, अंतर्जातीय विवाह, विधवा विवाह, रजिस्टर्ड मैरिज आदि प्रचलित हैं। आधुनिक विवाह के अन्य प्रकार इस प्रकार है- एक विवाह, बहु विवाह, विधवा विवाह, बाल विवाह, प्रौढ़ विवाह, अनमेल विवाह आदि।

विवाह संस्कार परिवार जीवन की आधारशिला है। विवाह से दाम्पत्य जीवन का आरंभ और विकास होता है। लड़की जब विवाह करने योग्य हो जाती है तो मां-बाप उसके लिए योग्य वर की खोज करते हैं और योग्य वर मिलने के बाद विवाह कर देते हैं। विवाह के बाद पति-पत्नी को ही दम्पति कहां जाता है। भारतीय जीवन में विवाह बंधन को अनिवार्य माना गया है। विवाह के पहले एक स्त्री केवल एक पुत्री और बहन रहती है किन्तु विवाह के बाद उसे अलग-अलग प्रकार की भूमिकाएं निभानी पड़ती है जैसे कि पत्नी, बहू, मां, भाभी, देवरानी, जेठानी, चाची, मामी आदि। इन सब में पत्नी की भूमिका महत्वपूर्ण रहती है। वैदिक साहित्य में पत्नी को पति के घर में सर्वोपरि स्थान दिया गया है। इसका प्रमाण ऋग्वेद का यह कथन है- पत्नी ही घर है। कुदरत ने नारी को पुरुष के पूरक रूप में बनाया है। एक के बिना दूसरे का अस्तित्व अपूर्ण तथा अधूरा ही रहता है। विवाह इसी प्राकृतिक विधान का सामाजिक एक संस्कार है। पत्नी बनकर नारी पुरुष की अर्धांगिनी बनती है और अपने दाम्पत्य जीवन की सार्थकता पाती है। पति-पत्नी दोनों के आपसी सहयोग से दाम्पत्य जीवन का संचालन होता है। पति-पत्नी के अच्छे और बुरे व्यवहारिक संबंधों पर सफल और असफल दाम्पत्य जीवन का आधार रहता है। भारतीय समाज में स्त्री को धर्मपत्नी तथा अर्धांगिनी की संज्ञा

दी गई है जिसका अर्थ है पुरुष का आधा भाग उसकी पत्नी है। अर्थात बिना विवाह के स्त्री-पुरुष का व्यक्तित्व अधूरा रहता है। विवाह के बाद ही एक पुरुष और एक स्त्री का व्यक्तित्व पूर्ण बनता है। रामायण ग्रंथ में पत्नी को पति की आत्मा माना गया है। महाभारत ग्रंथ के अनुसार वह पति का आधा भाग है, वह पत्नी का उत्तम मित्र है। इससे पता चलता है कि दाम्पत्य ही परिवार का मुख्य आधार है। नारी और पुरुष के परस्पर आकर्षण ने साहचर्य की भावना को जन्म दिया और समाज में इसी सहचार्य को विवाह के रूप में स्थापित किया। भारतीय परिवार में दाम्पत्य संबंध को जितना महत्व दिया गया है उतना अन्य किसी संबंध को नहीं दिया गया। दाम्पत्य जीवन को सफल बनाने में नारी यानी पत्नी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

भगवान शिव की अर्धनारीश्वर की प्रतिमा यही साबित करती है कि स्त्री के बिना पुरुष और पुरुष के बिना स्त्री अधूरे है, अपूर्ण है। पति और पत्नी दाम्पत्य जीवन के अभिन्न अंग है। पति के बिना पत्नी अपूर्ण है और पत्नी के बिना पति आधा-अधूरा है। वैदिक युग में दाम्पत्य जीवन की पवित्रता का बड़ा ही महत्व था, महाभारत में भी यही क्रम है। इन सब बातों पर दंपतियों की आस्था थी तथा वे सुख पूर्वक दाम्पत्य जीवन का निर्वाहन करते थे, एक दूसरे का रक्षण करना और पोषण करते रहना तथा परस्पर सुख की कामना करते रहते थे। भारतीय जीवन मूल्यों ने दाम्पत्य जीवन को सुरक्षित रखने का अच्छा प्रयास किया है किंतु आधुनिक वैज्ञानिक युग में जहां जीवन मूल्यों में विघटन हो रहा है वही दाम्पत्य जीवन में परिवर्तन होना एक स्वाभाविक बात है। वर्तमान युग में सफल दाम्पत्य जीवन की अपेक्षा समाज में असफल दाम्पत्य जीवन के चित्र अधिक देखने को मिलते हैं। जैसे कि मोहन राकेश का नाटक 'आधे-अधूरे' इसका जीता जागता उदाहरण है।

दाम्पत्य जीवन स्त्री और पुरुष का समाज मान्य सम्मिलन है। भारतीय संस्कृति के दृष्टिकोण से विवाह एक धार्मिक संस्कार माना जाता रहा है। विवाह के बाद

ही सही अर्थ में दाम्पत्य जीवन का आरंभ होता है। पति-पत्नी अपने सुखमय दाम्पत्य जीवन के सफल होने की कामना करते हैं। दाम्पत्य जीवन को सफल बनाने के लिए पति और पत्नी प्रयत्नशील भी रहते हैं। इसीलिए आज भी भारतीय समाज में दाम्पत्य जीवन को अन्य किसी भी पारिवारिक संबंध से बहुत ज्यादा महत्व दिया गया है क्योंकि दाम्पत्य जीवन ही परिवार की मुख्य आधारशिला है।

भारतीय संस्कृति में दाम्पत्य संबंध को जन्म-जन्मांतर का संबंध मानते हैं। यही इसकी अटूटा का प्रमाण है। दाम्पत्य जीवन में पति-पत्नी एक-दूसरे की कमजोरियों को नजर अंदाज करते हैं या फिर स्नेह पूर्ण व्यवहार से उसे दूर करते हैं। जहां इस पवित्र संबंध को पूरी निष्ठा दी जाती है, एक दूसरे की भावनाओं, संवेदनाओ को ध्यान में रखकर चला जाता है वहां कोशिश करने के बावजूद भी तीसरा प्रवेश नहीं कर पाता। जहां पति-पत्नी के मन में दुविधा और असंतोष हो, मन में खोट हो, दाम्पत्य जीवन को गंभीरता से न लिया जा रहा हो, वहां तीसरे व्यक्ति के प्रवेश की गुंजाइश रहती है। जिस संबंध में पति-पत्नी में समझौता नहीं हो पाता वहां उनका अहम प्रबल हो उठता है। परिणाम स्वरूप दाम्पत्य जीवन में तनाव की स्थिति का निर्माण हो जाता है। इस आपसी टकराहट के कारण पति-पत्नी को अपने दाम्पत्य संबंधों से अतृष्णा सी होने लगती है। इन सारी यंत्रणाओ के बावजूद दोनों अनचाहे संबंध लगातार निभाए चले जाते हैं।

भारतीय समाज में पतिव्रता नारी पति द्वारा तिरस्कृत होने पर भी पति से घृणा नहीं करती। उस पर शक नहीं करती और उसकी याद में पल-पल मरती जाती है। हमारी संस्कृति में बचपन से ही नारी को पति का आदर करना सिखाया जाता है और पति को परमेश्वर मानने का उपदेश भी दिया जाता है। भारतीय समाज में पतिव्रता नारी विवाह को लोक-परलोक का बंधन मानती है। सात जन्मों का अटूट बंधन मानती हैं। अपने सुहाग की रक्षा के लिए करवा-चौथ जैसे कठिन व्रत करती है।

परंपरा से जुड़ी नारी पुरुष के प्रति सदैव आस्थावान एवं समर्पित रहती है। वह किसी भी मूल्य पर अपने सतीत्व को दांव पर नहीं लगाती। पत्नी बनने के बाद वह मातृत्व सुख की कामना करती हुई स्वयं को संपूर्ण स्त्री बनाना चाहती है। किन्तु आज भी हमारे समाज में उसे देवी बनाकर उसके मातृत्व से खिलवाड़ किया जाता है। स्त्री अगर बांझ हो तो पति और समाज द्वारा उसका तिरस्कार किया जाता है। जैसे कि कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव की 'सोनचिरई' कविता में बताया गया है। यह मध्यमवर्गीय परिवार की हर उस पत्नी का दुख है जो मां-बाप द्वारा खोजे गए कृपात्र को स्वीकारती है। भारतीय नारी पति की खुशी के लिए किसी भी विपरीत परिस्थितियों से समझौता करना अपनी नियत ही समझती है। पति के द्वारा जो कुछ भी मिलता है उसे वह अपना सौभाग्य समझती हैं। कभी-कभी वह अंदर से टूट कर बिखर जाती है। पारिवारिक परिवेश को सुंदर बनाने का एकमात्र साधन दाम्पत्य जीवन है। इसके लिए बहुत कुछ सहना पड़ता है। यह एक ऐसा समझौता है समाज में जिसमें दोनों को बहुत कुछ त्यागना पड़ता है। अपने पवित्र प्रेम और निष्ठा के कारण पत्नी सदा पति के प्रति समर्पित रहती है। हमारे देश में पत्नी कठिन से कठिन परिस्थितियों तथा विवशता की चरम सीमा में भी पति के अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष को अपना सर्वस्व नहीं मानती। ऐसी ही पवित्र पतिव्रता नारीयां अपना अस्तित्व इस कदर खो देती है कि चुपचाप अत्याचार सहन कर लेना ही उसकी नियति बन जाती है। परंपरागत भारतीय पुरुष की यह कामना रहती है कि उसकी पत्नी एक अच्छी गृहिणी होकर रहे और अन्य पुरुषों से दूर रहें जिससे वह पवित्र रहकर पतिव्रत धर्म का पालन कर सकें।

भारतीय समाज में दाम्पत्य जीवन ही परिवार का मूलाधार है। स्त्री-पुरुष दाम्पत्य जीवन के मुख्य आधार स्तंभ होते हैं। पति-पत्नी के बीच जो परस्पर स्नेह और प्रेम होता है वही दाम्पत्य जीवन में नई उजास लेकर आता है। दाम्पत्य जीवन में आपसी कलह ही नई-नई समस्याओं को जन्म देती है। दाम्पत्य जीवन की कटुता संपूर्ण जीवन को कभी-कभी विषमय बना देती है। दाम्पत्य जीवन का

अपना ही एक सुख है जो अमिट है और असीम है। धर्म, अर्थ और काम तीनों का समन्वय दाम्पत्य जीवन में तभी संभव है जब तक पति-पत्नी एक-दूसरे की इच्छा अनुसार चलते रहेंगे।

हमारे समाज में आज दाम्पत्य जीवन अपनी परंपरागत विचारधारा के साथ अपनी पवित्रता बनाए हुए हैं। भारतीय पति-पत्नी एक-दूसरे के प्रति समर्पित है। किन्तु कहीं कहीं पर आधुनिकता और पश्चिमी सभ्यता के कारण पति-पत्नी अपने दाम्पत्य जीवन से उब रहे हैं। आज आधुनिक भारतीय पत्नी अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व चाहती है। जब पुरुष उस पर अपना अधिकार जताता है तब उसका अहम भाव जागृत हो जाता है और इस प्रकार से पति-पत्नी के बीच अलगाव की स्थिति बढ़ जाती है। एक ही घर में रहने के बावजूद पति-पत्नी एक दूसरे से काफी दूर हो रहे हैं। कई बार यह अंतर इतना बढ़ जाता है कि वे एक दूसरे से तलाक भी ले लेते हैं तलाक के बाद पुनर्विवाह भी कर लेते हैं। परंपरागत सभ्यता में काफी परिवर्तन हो रहा है। सभ्यता, मूल्य और संस्कृति के नए मापदंड समाज में स्थापित हो रहे हैं। आज भारतीय पत्नी के सामने सीता और सावित्री के आदर्श रखे जाते हैं, किन्तु आज की शिक्षित पत्नियां आंख मूंदकर पति की प्रत्यक्ष आज्ञा का पालन करने को तैयार नहीं है। वे पति की सहचारी तथा मित्र बनना चाहती हैं। अब उन्हें घर की चार दीवारी में बंद नहीं रखा जा सकता। भारतीय संस्कृति के जीवन मूल्यों को आधुनिकता की चुनौती ने इतना बदल दिया है कि दाम्पत्य संबंधों में काफी परिवर्तन आ गया है। यह बदलते हुए परिवेश का ही परिणाम है।

'बिल्कुल तुम्हारी तरह' यह कविता संग्रह जितेन्द्र श्रीवास्तव ने अपनी जीवनसंगिनी श्रीमती श्यामली जी को समर्पित किया है। इस काव्य संग्रह में जितेन्द्र श्रीवास्तव ने अपने २२ साल के अधिक सुखमय दाम्पत्य जीवन को चित्रित किया है। जो एक आदर्श भारतीय दाम्पत्य जीवन को निरूपित करता है। इस काव्य संग्रह में कवि ने अपनी पत्नी प्रेम को बखूबी अभिव्यक्त किया है। पत्नी से पहली बार मिलना, विवाह के बाद व्यवसाय कार्य के लिए अलग-अलग जगहों पर जाना जैसे

कि धारचूला, पिथौरागढ़ और बभनान। ऐसे में पत्नी की यादें और बच्चों की यादों को कवि ने अपनी कविताओं के द्‌वारा अभिव्यक्त किया है। पत्नी और बच्चों की यादों के सहारे किसी अनजान शहर में जीवन व्यतीत करना आसान नहीं है। 'बिल्कुल तुम्हारी तरह' काव्य संग्रह जितेन्द्र श्रीवास्तव की प्रेम कविताओं में शब्द अर्थ में पिघल जाता है और अर्थ शब्द का रूपाकार ग्रहण कर लेता है। उनकी कविता जिस ताकत से अपनी जगह बनाने में सफल है। उसका उत्स उसकी प्रेम संवेदना में ही है। दैहिक और निजी संदर्भों के स्तर पर पक कर यह प्रेम उनकी कविताओं में एक नई व्याप्ति प्राप्त करता है। प्रेम की व्याप्ति जितेन्द्र की कविताओं में न केवल स्त्री की आंतरिक दुनिया की वेदना तक फैली हुई है किन्तु इसकी जर्द में वह सारा समय और समाज दाखिल होता है जो किसी ना किसी रूप में कवि के निजी अनुभव का हिस्सा रह चुका है। यहां कवि खुलकर स्वीकार करता है कि वह प्रेम ही है जिसने उसे और उसकी संवेदना को अधिक मानवीय भावाकुल और निडर बनाया है। जितेन्द्र श्रीवास्तव की प्रेम कविताएं दाम्पत्य जीवन से प्रेम, वायु और धुप ग्रहण करती है। यहां लालसा से नहीं परन्तु यह साहचर्य से जन्मा प्रेम है। छोटी-छोटी स्मृतिओं के जरिए बुनी गई इन कविताओं की गहराई पाठकों से अलक्षित नहीं रह पाएगी। दाम्पत्य जीवन के प्रति गहरी आस्था से उपजी कविताएं हैं। इन कविताओं में अभिव्यक्त प्रेम, दुनिया से कटकर सार्थकता नहीं पाना चाहता। वह इसी जीवन के सुख-दुख का हिस्सा है। एक ऐसे समय में जब विद्रोह के प्रचलित शब्द बेमान होने लगे, संघर्ष के सारे रूपों को आततायी सत्ता की संस्कृति संदेहास्पद बनाने लगे। तब प्रेम कविताओं की जरूरत बढ़ जाती है। कवियों के दायित्व भी बढ़ जाते हैं। यह सुखद है कि जितेन्द्र का कवि सरल निश्चल जीवन की खोज में हर उस जगह जाना चाहता है जहां प्रेम एक आदत की तरह हो। जीवन का सार हो। उनका प्रेम दैहिक दायरे से निकलकर अपने विस्तार में पूरी कायनात को समेट लेने को उत्सुक है। न केवल उत्सुक किन्तु कल्पना की असंभव हदों तक जाकर उस स्वप्न संसार को संभव कर लेना

चाहता है। निश्चय ही कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव की दाम्पत्य जीवन पर आधारित यह प्रेम कविताएं जीवन को एक नया अर्थ देने वाली कविताएं है।

कवि जितेन्द्र के यह प्रचुर मात्रा में दाम्पत्य जीवन पर आधारित पत्नी प्रेम की कविताएं मिलती है। पत्नी प्रेम की इन कविताओं से वे नहीं गुजर रहे, बल्कि यह कविताएं उनके भीतर गुजर रही है। उनके अंत: मन में ये अपना एक स्थायी स्थान बना रही है, बल्कि कहे बना चुकी है। कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव की यह खास विशेषता है कि चुपके से अपनी संवेदना को दूसरे की संवेदना का अंग बना देते हैं। कवि जितेन्द्र लिखते हैं-

"इक्कीसवीं सदी की दहलीज पर खड़े समाज में

इससे बड़ी त्रासदी ना होगी

की प्रेम एक वर्जित फल बन जाए"[1]

कवि की चिंता गलत नहीं है। आज प्रेम का घनत्व कम होता जा रहा है। मशीनी दुनिया में, मनुष्य का मन तथा मस्तिष्क दोनों उसके शरीर से अलग, मशीन की तरह ही आचरण करने लगा है। इक्कीसवीं सदी के मशीनी मनुष्य को अपने 'माता-पिता, पत्नी और भाई की आंखों में प्रेम की जड़े कम दिख रही है। आज के प्रेम में दिखावा आ गया है। हर संबंध में एक प्रदर्शन का भाव दिख रहा है। प्रेम की इस बदलती हुई परिभाषा को देखकर कवि सोचता है कि शायद किसी दिन 'गूलर का फूल ना हो जाए प्रेम।' पर कवि जैसे लोगों के रहते प्रेम कभी नहीं होगा गूलर का फूल। इसका प्रमाण हमें दिखता है कवि की कविताओं में। प्रेम उनकी कविताओं में योजना के तहत नहीं बल्कि एक आदत की तरह आता है।

कवि के यहां प्रचुर मात्रा में पत्नी प्रेम की कविताएं मिलती है और वह भी एक से एक उत्कृष्ट। इनकी अधिकांश प्रेम कविताएं दाम्पत्य के साहचर्य से उपजी है। कवि का प्रेम संसार पत्नी और बेटियों की छोटी-छोटी यादों से मिलकर बना है।

उनके जीवन की खुशी, उनके होठों की हंसी के अनुपात पर निर्भर है कवि की खुशी। उनकी हंसी कवि के लिए संजीवनी का काम करती है। वह कहते हैं कि-

"कि तुमको मालूम नहीं शायद

कि मैं बचा हूं जितना भी अभी तक

इसी हँसी की कोर में ठहरा हुआ सा"[2]

पत्नी के साहचर्य के दम पर वह हर रोग और शोक से लड़ने का हौसला रखते है। वह अपनी पत्नी से कहते हैं कि-

"बस हाथ पकड़ी रहो

मुस्कुराती रहो

एक दिन पलकों पर सहजकर लाऊंगा बहारों को

तुम धीरे से उतार लेना उन्हें जीवन में

देखो, थका नहीं हूं मैं"[3]

यहां हाथ पकड़ने का अर्थ साथ निभाने से हैं। पत्नी के साथ से उनके जीवन में इतनी गरमाहट और ताकत आ जाती है कि वह अपने आप को हारा हुआ या फिर थका हुआ महसूस नहीं करते। पत्नी के सहारे वे हर दुख और निराशा के समंदर को भी पार कर सकते है। यह है दाम्पत्य जीवन में पत्नी प्रेम की शक्ति।

कवि के लिए उनकी बेटियां उनकी प्राणशक्तियां है। बेटियों की हंसी बेजान दवा को भी असरदार बना देती है। जहां दवा बेअसर साबित हो चुकी है, वहां उनकी हंसी काम आती है।

"बेटियां होती ही शहद है

जो मिटा देती है

आत्मा की सारी कड़वाहट।"[4]

'ओ मेरी बेटियों याद रखना' कविता में कवि कहते है कि

"तुम लोगों की जिहवा पर विराजती पवित्रता और होठों की हंसी

हमारे समय में जीवन की आशा है

.... तुम लोगों के खिलखिलाने में बचा रहेगा जीवन"[5]

यह है सच्चे प्रेम का विश्वास है। जिसके सहारे व्यक्ति हर दुख और तकलीफ को मात दे सकता है। इन संबंधों के सहारे वह मृत्यु को भी पछाड़ सकता है। उस से दो-दो हाथ कर सकता है। पर अफसोस आज प्राणदायिनी और जीवनदायिनी शक्तियां होती जा रही कम या हम इन्हें देख नहीं पा रहे हैं। हम इस बात को भूलते जा रहे हैं कि यदि पत्नी, परिवार साथ हो तो हम बड़ी से बड़ी मुसीबत से भी लड़ सकते हैं। पर आज भागदौड़ के जीवन में परिवार टूट रहा है, बिखर रहा है और साथ में हमारा हौसला और विश्वास भी टूट रहा है।

कभी-कभी कवि बिल्कुल अपनी पत्नी की तरह होना चाहते है। वह एक स्त्री की तरह सोचना और काम करना चाहते है, पर कर नहीं पाते। यह सोचकर वह आश्चर्यचकित होते है कि पत्नी कई-कई दिनों तक घर और बाहर दोनों का काम चुपचाप हंसती हुई कर लेती है। जबकि वह ठीक से अपने हिस्से का भी काम नहीं कर पाते। उसमें भी उसे पत्नी की सहायता लेनी पड़ती है। पत्नी एक दिन के लिए भी बाहर चली जाती है, तो पुरुषों का जीवन वीरान हो जाता है। वह छोटी-छोटी बातों पर झुझलाते है, गुस्सा हो जाते हैं, कभी खुद पर तो कभी बच्चों पर। पर पत्नी कभी गुस्सा नहीं करती। पति पर या बच्चों पर नहीं झुझलाती। उसकी सहनशीलता को देख कवि प्रश्न करते है-

“आखिर किस ताक पर रख दिया है तुमने अपना गुस्सा”[6]

परिवार की खुशी के लिए वह अपना गुस्सा ही नहीं बल्कि अपनी जीभ का स्वाद और इच्छाएं भी भूल चुकी है। परिवार का स्वाद ही उसका स्वाद है, उनकी इच्छाएं ही उसकी इच्छाएं है। कवि यहां अतिरिक्त नहीं दिखा रहे। यह सच्चाई है, हमारे भारतीय स्त्रियों के जीवन की। यह पहचान है, उनके प्रेम की। पत्नी आगे बढ़कर पति के दुख, तकलीफ को थाम लेती है। वह उसके सुख को जानती हैं। पर पुरुष उसके सुख को, उसकी इच्छाओं को नहीं जान पाता। क्योंकि ‘उसके अंदर स्त्री की आत्मा’ नहीं बस्ती। वह स्त्री की तरह सोच नहीं पाता। ऐसे समय में सोचना तो अधिक कठिन हो जाता है ‘जब बच्चियां मारी जा रही है कोख में ही’। इस असंवेदनशील समय में एक स्त्री की आत्मा को, उसके मन को पढ़ना बहुत ही कठिन बात है।

कवि सोचता है अबकी बार वह सिर्फ पत्नी की सुनेगे, बिल्कुल उसकी तरह, बिना कुछ बोले-

“अबकी बार में घर आऊ

तुम अपनी कहो

अपने जैसों की कहो

और मैं सुनूं उसी तरह

जैसे सुनती हो तुम”[7]

पर उन्हे कहीं ना कहीं इस बात का संदेह है कि वह उसकी तरह नहीं सुन सकते मन में बसी पत्नी से वह प्रश्न करते है-

“वैसे सच-सच बताना

क्या तुम्हें लगता है

मैं सब कुछ सुन पाऊंगा

बिल्कुल तुम्हारी तरह”[8]

कवि ही नहीं, शायद कोई भी पति या प्रेमी उतने धैर्य से बिना कुछ बोले पत्नी या प्रेमिका की बात नहीं सुन सकता, जितने धैर्य से वह मुस्कुराती हुई सुनती है। यह भ्रम नहीं होना चाहिए कि वह पुरुष के डर की वजह से चुप हैं। उसकी चुप्पी में डर नहीं, बल्कि पुरुष के अस्तित्व का सम्मान छिपा हुआ है।

स्त्री के बिना पुरुष के जीवन का कोई अर्थ नहीं है। वह इस बात को स्वीकार करते हुए कहते है-

“तुम हो तो/यह जीवन है

तुम्हारे बिना/कल्पना भी नहीं जीवन की

प्रिये!

यह प्रेम बोध नहीं क्षण भर का

यह यात्रा है जीवन की

तुम हो तो बल है चलने का

तुम हो तो मन है

पलकों पर आकाश उठाने का

तुम हो तो/ मैं हूं /तुम हो तो

यह जीवन/जीवन है।”[9]

स्त्री के बिना पुरुष का जीवन, जीवन नहीं है। स्त्री बीना उसका जीवन खंडहर की तरह है। उसके जीवन की शक्ति, बल और प्रेरणा स्त्री ही है। उसके साहचर्य और

प्रेम के सहारे ही वह संसार को जीत सकता है। पुरुष का अस्तित्व उससे अलग नहीं है। कवि की पत्नी उनसे एक क्षण के लिए भी दूर नहीं रहती। वह हरदम उसके संग रहती है। स्मृति में, वह कहते हैं-

"तुम कभी नहीं रहती

मुझसे दूर

यह निरभ्र आकाश

गवाह है/मेरी इस बात का

तुम रहती हो

मुझ में/गहरे बहुत गहरे कहीं

मेरी आत्मा के रस में घुली हुई

जीवन रस की तरह।"[10]

पत्नी कवि की आत्मा का हिस्सा है। पत्नी का होना सिर्फ देह का होना नहीं है। उसके होने के एहसास से वह कभी अकेला नहीं होता। उनकी स्मृतियों में वह हमेशा उसके साथ रहती है। जिस दिन वह उनकी स्मृति से दूर हो जाएगी। उस दिन उसका 'जीवन रस' भी सूख जाएगा।

बच्चों की किलकारियां, पत्नी की मुस्कुराहट और उनके अथाह प्रेम से ही कवि का घर,घर बना है। घर ईट-पत्थरों से नहीं, किन्तु सपनों और अपनों से बनता है। कवि को लगता हैं अगर जो पत्नी ना आती जीवन में तो घर की इच्छा शायद कभी पूरी नहीं होती। "मैं कब से ढूंढ रहा था/एक घर/अब मिली हो तुम/लगता है/घर भी मिल जाएगा/तुम्हारी बाहों में/तुम्हारे प्यार में/तुम्हारी मुस्कान में।"[11] इसलिए वह अपने आपको पत्नी से अलग करके नहीं देख पाते। पत्नी की उपस्थिति ही नहीं, किन्तु उसकी स्मृति भी कवि के अंदर गजब का उत्साह तथा

विश्वास भर देती है। पत्नी के एक दिन अस्वस्थ होने से कवि का घर उदासी से भर जाता है। हमेशा खिलखिलाने वाली बच्चियां चुप सी हो जाती है। घर की "हंसी किसी/अदृश्य ताख पर/बैठ गई हो।"[12] यह है दाम्पत्य जीवन में पत्नी का महत्व। कवि का यह पत्नी प्रेम ही है कि उन्हें घर से बाहर ट्रेन की चाय भी अच्छी नहीं लगती। बाहर की चाय उसके मन के रस में नहीं उतरती और पत्नी के हाथों की चाय उसके मन के रस से नहीं उतर पाती। कवि कहते हैं कि-"घर से दूर ट्रेन में पीते हुए चाय/साथ होता है अकेलापन/वीतरागी सा होता है मन/शक्कर चाहे जितनी अधिक हो/मिठास होती है कम/चाय चाहे जितनी अच्छी बनी हो/उसका पकापन लगता है कम"[13]

कवि के मन में पत्नी प्रेम की मिठास इस कदर घुली है कि कोई मिठास उसके 'मन-रसना' में नहीं उतर पाती। बाहर की छोड़िए पत्नी की अनुपस्थिति में घर की चाय भी कवि को गरम पानी सी लगती हैं- "पत्नी के बिना/घर की चाय/लगा जैसे/गरम पानी उतारना हो हलक में।"[14] स्त्री घर और जीवन के साथ-साथ स्वाद तक में प्रवेश कर गई है। इस बात का एहसास हमें तभी होता है, जब वे अनुपस्थित रहती है। उसका होना बहुत मायने रखता है। उसके होने के महत्व को कवि रेखांकित करते हुए कहते है- "वह सुख है मेरा/वह नहीं/तो वीरान बाजार हूं मैं/हम घुले है एक दूसरे में इस तरह/जैसे दाल में घुलता है नमक/मेरे लिए/उसका होना /मेरा सुख है/उसका प्यार/जीवद्रव्य है"[15]

कवि के लिए उनकी पत्नी 'प्राणवायु' की तरह है। यह स्त्री की खास विशेषता है कि 'वह असमय मृत्यु से बचा लेती है पुरुष को'। घर से दूर किसी वीरान शहर में वह पत्नी की मुस्कुराहट को याद करके ही जिंदा रहता है। इस उम्मीद के साथ वह बड़ी से बड़ी मुसीबतों का सामना कर लेता है- "किसी दिन लौटूंगा/शगुन का पान लिए फूलों की टोकरी के साथ/जैसे लौटते हैं सपने बसंत के दिनों में/फागुन के रंगों में/जैसे लौटते हैं पत्ते पतझड़ के बाद टहनियों तक/मैं भी लौटूंगा उस चेहरे तक"[16] पत्नी की स्मृति ही उन्हे अनजान शहर में असमय मृत्यु से बचाती रहती

है। हमारे गांव के युवक इसी चेहरे को स्मृति में बसा कर सालों तक अनजान शहर में जूझते रहते हैं। पत्नी की मुस्कान और स्मृति उनका कवच और शक्ति है। उनके देह ही ढाल है। 'मेरी प्रतीक्षा से लंबी एक प्रतीक्षा' कविता में भी कवि इस बात का उद्घाटन करते है। वह कहते हैं कि-

"तेईस दिनों का अकथ दुख लांघकर

मैं लौट रहा हूं घर

मेरी सांसों में अज्ञात फल की गंध

कानों में उत्साह भरती किलकारियां

और आंखों में चेहरे हैं बेटियों के

मेरे कदम भागते हैं हर सांस के साथ

मैं पहुंचता हूं घर जहा

मेरी प्रतीक्षा से लंबी एक प्रतीक्षा

राह अगोरती मिलती है मुझसे"[17]

अज्ञात गंध, उत्साह भरती किलकारियां, बेटियों के चेहरे और राह अगोरती पत्नी की आंखें, यही वह संजीवनी शक्ति है। जो उन्हे हर दुख से लड़ने की हिम्मत देती है। कवि को बचाए रखती है। सच में, कवि जितेन्द्र का पत्नी प्रेम अद्भुत है। जिस प्रकार हवा वायुमंडल में घुली-मिली रहती है, उसी प्रकार कवि के मन में पत्नी की स्मृति घुली मिली है। उसे उससे अलग करके नहीं देखा जा सकता। एक क्षण के लिए भी वह उनसे अलग नहीं हो पाती। यही वजह है कि वह जब भी घर से बाहर जाते है, पत्नी की याद में कम से कम एक कविता जरूर लिखते हैं। अकेले सफर में वह सबसे अधिक अपनी पत्नी के साथ रहते हैं। उनके लिए पत्नी का होना 'सिर्फ देह का होना' नहीं है। इसका प्रमाण हर कविता में दिखता

है। कविता को छोड़िए 'बिल्कुल तुम्हारी तरह' पुस्तक के कवर पर भी एक स्त्री के चेहरे की तस्वीर है, उसके देह की नही। उसमें माथे पर बड़ी सी बिंदी तथा प्रेम से सरावोर उसकी आंखें राह अगोरती दिख रही है। यानी, कवि के जीवन में या यू कहे किसी भी पुरुष के जीवन में पत्नी की उपस्थिति या महत्व इस पुस्तक के कवर की तरह है। जिस प्रकार कवर के बिना पुस्तक कुरूप, बदसूरत और कुछ-कुछ नंगा सा दिखता है, ठीक वैसे ही स्त्री (पत्नी) के बिना पुरुष (पति) भी कुरूप, बदसूरत और नंगा सा दिखता है।

दाम्पत्य प्रेम पर आधारित कवि जितेन्द्र की कविता 'कि तुम जाती हो', कविता में कवि ने अपनी प्राणप्रिय पत्नी के अलगाव की स्थिति में अपने प्रेम को व्यक्त किया। पत्नी से अलगाव की स्थिति में कवि मन व्यथित हो उठाता है। कुछ क्षण के लिए पत्नी जब घर से जाती है तो लगता है जैसे सिरहाने से प्रेमरुपी गरम धूप चली गई हो। रास्ते भी इंतजार करते हैं पत्नी के। इस समय कवि अपनी पत्नी प्रेम में बिल्कुल अकेले हैं-

"सरकती है सिरहाने धूप

कि तुम जाती हो

देखो तो सही

देखो न

ओ प्राण मेरी

कि रात आती है

कि तुम जाती हो"[18]

कवि अपनी पत्नी से इतना ज्यादा प्यार करते हैं कि क्षण भर के अलगाव से पहले उसके अनार के फूलों जैसी संजीवनी हंसी को महसूस करना चाहते हैं। कवि

जीवन के कठिन समय में इसीलिए बच पाए हैं क्योंकि वह अपनी पत्नी की हंसी की कोर में ठहरे हुए हैं। एक सूखे पत्ते की तरह कभी अपनी पत्नी के होठों पर अटके हुए हैं। वह गिरना नहीं चाहते अपने पत्नी के अधर से। वह अपनी पत्नी को रोककर अपनी धडकन को छूना चाहते हैं। 'विदा' नामक कविता में कवि वह शहर छोड़ रहे है जहां वह व्यवसाय के लिए वर्षों रहे हैं। बस की प्रतीक्षा करते हुए कवि छोड़ रहे वह शहर जो शहर कभी कवि की सांसों में पत्नी की तरह रहा था। कवि अब इस अनजान शहर से विदा हो रहे हैं जहां पत्नी का प्रेम ही ना हो। वह पहचानेगा कौन? एक अनजान शहर में अपनी पत्नी की यादों और प्रेम के सहारे उन्होंने काफी साल व्यतीत किए। यह प्रेम की ही शक्ति है जो अलगाव की स्थिति में एक अनजान शहर में उन्हें बचाती आ रही है। अजनबी शहर से विदा लेते समय कवि कहते हैं-

"जब तुम नहीं

फिर मैं कहा!"[19]

दाम्पत्य जीवन में मिलन के साथ कभी-कभी विरह भी आता है। तब पति-पत्नी के बीच जो प्रेम होता है जो प्यार भरी यादें और स्मृतियां होती है। वही अकेलेपन में साथ होती है। स्मृतियां कभी हमें अकेलापन महसूस नहीं होने देती। कवि का मानना है कि पत्नी जब घर से जाती है तो चुटकी भर स्मृतियां भी उसके साथ यात्रा में रहती है। यात्रा में थकावट को कम कर देती है। पत्नी की पूरी यात्रा में कवि की स्मृतियां लगातार पत्नी के साथ है जो उसे कभी अकेला नहीं छोड़ती और इसी यादों के सहारे यह विरहरूपी कठिन समय व्यतीत होता है और आपसे में प्यार ओर भी बढ़ जाता है। दाम्पत्य जीवन में मिलन के साथ-साथ विरह भी जरूरी है। क्योंकि कुछ क्षण बिछड़ने से प्यार बढ़ जाता है। इसीलिए कवि कहते हैं-

"तुम्हारा कहीं भी होना

मेरे साथ होना है

मेरा कहीं भी हो ना

तुम्हारे साथ होना है

तुम कहीं भी जाओ

कितनी भी बच कर जाओ

चुटकी भर चला ही आऊंगा तुम्हारे साथ।"[20]

आज आधुनिक जीवन में एक बहुत बड़ी समस्या उत्पन्न हो गई है। अपनी गृहस्थी चलाने के लिए पति को घर से बाहर जाना पड़ता है कभी-कभी तो घर से बहुत दूर दूसरे शहर में जाना पड़ता है। व्यवसाई जीवन में सुबह से शाम तक घर चलाने के लिए काम करना और फिर घर आकर थक कर सो जाना यही नित्यक्रम रहता है आजकल पुरुषों के। दूसरी ओर स्त्री जो पूरा घर संभालती है। घर का काम करना, दफ्तर का काम करना, पति को नौकरी जाने के लिए तैयार करना, बच्चों को संभालना तथा पाठशाला जाने के लिए तैयार करना। इन सब में आजकल दाम्पत्य जीवन में एक-दूसरे के लिए अवकाश भी नहीं की कुछ क्षण एक-दूसरे के लिए निकालें। दाम्पत्य जीवन में पति-पत्नी एक दूसरे के लिए इतना अवकाश भी नहीं बचता की साथ में बैठकर प्यार भरे कुछ क्षण व्यतीत करें। यह भाव जितेन्द्र श्रीवास्तव की कविता 'मिलना' में व्यक्त हुआ है।

"हम मिलेंगे

जरूर मिलेगे

आज बिल्कुल आज

इसी क्षण जब मैं लिख रहा हूं

हम मिल पाते बिसराकर देह-धुन भौतिक घुन

और कोई जरूरत ही नहीं रह जाती इसे लिखने की"[21]

'मिलना' कविता की तरह ही एक दूसरी कविता है जितेन्द्र श्रीवास्तव की 'तुम जब चाहो'। इस कविता में कवि का मानना है कि दो प्यार करने वालों को मिलने के लिए किसी विशेष क्षण की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए। जब अंतर्मन में प्रेम उमड़ रहा हो। तब फासलों की दूरियों को मिटा कर मिल लेना चाहिए क्योंकि महज दो बाहों में जीवन नहीं होता। जीवन चार आंखों से देखा गया एक सपना है। बीस उंगलियों से तलाशी हुई एक तस्वीर है। चार पैरों से चली हुई दूरी। बिन बोले चार अधरों का कंपन। बिन कहे एक दूजे के लिए बटोरा ऑक्सीजन। यही तो जीवन है एक दूसरे में मिल जाना कि असंभव हो जाए अलग करना। इसीलिए कवि कहते हैं- "तुम जब चाहो जहां चाहो जैसे चाहो/हम मिल सकते हैं खिलखिला सकते हैं"[22]

दाम्पत्य जीवन में प्रगाट प्रेम के कारण एकरूपता आ जाती है। इसी कारण कवि को अपने हाथों की हथेली की रेखाए अपनी पत्नी की माथे की रेखाए जैसी लगती है। जितेन्द्र श्रीवास्तव को अपने व्यवसाई जीवन में कई बार घर से दूर रहना पड़ा लेकिन वह पत्नी से इतना प्रेम करते है की उन्हें कभी एहसास भी नहीं हुआ कि वह पत्नी से दूर है। उन्हें लगता है कि उनकी पत्नी उनके आसपास ही है। घर से दूर एक अकेला कमरा भरा है पत्नी के एहसासों से। वैसे भी प्रेम में देह का पास होना जरूरी नहीं। कवि की पत्नी उनकी आत्मा के रस में घुली हुई है। जीवन रस की तरह।

'प्रेम करते हुए' कविता में कवि ने सच्चे प्रेम की व्याख्या की है। एक-दूसरे से सच्चा प्यार करना इसका यह अर्थ नहीं है कि प्रेम कविताएं लिखो या फिर प्रेम कविताएं पढ़ो। प्रेम करने का सच्चा अर्थ है कि एक-दूसरे को समझना है। एक

दूसरे की आंखों को पढ़ना। एक दूसरे की उंगलियों से बालों की लट्टो को बिखेरना और सवारना है। प्रेम का अर्थ है कि एक-दूसरे के चेहरे को हाथों में लेकर सुबह के सिंदुरी सूर्य की तरह निहारना। एक-दूसरे के साथ चलते हुए चांद को अंजूरी में भर लेना। एक-दूसरे से मन भर के लड़ना। एक दूसरे के गले में गला डालें खड़े रहे देर तक। प्रेम में मिलते रहना सागर की लहरों की तरह। मचलते रहना एक दूसरे की बाहों में। पहचानते रहे एक- दूसरे का शरीर। एक दूसरे का सपना। प्यार अर्थात मिल जाना एक दूसरे में। रचना एक दूसरे को। एक दूसरे का होना ही प्रेम कविता का पूरा होना होता है।

वर्तमान समय में लोगों के बीच जहां आपसी प्रेम, निस्वार्थ प्रेम, अपनत्व का भाव, अपनों के बीच का प्रेम भाव जहां खत्म हो रहा है। उसके विपरीत सकारात्मक रूप में जितेन्द्र श्रीवास्तव की 'पानी' नामक कविता मिलती है। इस कविता में कवि अपनी प्रियसी को एक ऐसे गांव में ले जाना चाहते है जहां अभी भी बचा है उत्सव जीवन का। जहां रंग नहीं उतरा है लाज का। जहां जब भी लोग आपस में मिलते हैं धधाकर मिलते हैं। जहां अभी त्यौहार पर लगते हैं मेले। जहां दाम्पत्य जीवन के प्रेम से परिपूर्ण पुरुष और स्त्रियां गाते हुए नाचते हैं। जहां सुख की बनी बनाई परिभाषाओं को बदलते हुए। जहां जीवन को मिलता है प्रेम और सुख की नई परिभाषा का अर्थ। कवि अपनी प्रियसी को ऐसे ही दिल के सच्चे, निस्वार्थ लोगों के बीच उनके गांव ले जाना चाहते हैं। जहां कृत्रिमभाव ना हो, प्राकृतिक भाव हो। लेकिन वास्तविकता तो यह है कि कहां बचे हैं ऐसे गांव, कहां बचे हैं ऐसे लोग जो पानीदार हो। कवि की इन बातों को सुनकर उनकी प्रियसी सोच रही है कहां गए वे लोग, क्यों नहीं बचे वे लोग, जिनके लिए जीवन का सार ही था प्रेम जैसी आदतें। जो भयंकर अकाल में भी बचा लेते थे मन और आंखों की सतह में भीगने जितना पानी।

कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव को अध्यापन के लिए धारचूला जैसे पहाड़ी इलाकों में भी रहना पड़ा अपनी पत्नी से दूर। तब वह अपनी पत्नी को याद करते हुए सुबह-

सुबह 'मन नयन' नामक कविता की रचना करते हैं। जो कि दाम्पत्य प्रेम से परिपूर्ण है। मई महीने की एक सुबह में पहाड़ों की ओर से आ रही थी शीतल मंद हवा। वह शीतल हवा कभी छू जाती है कवि की पलकों को कभी सहला जाती है कवि के बालों को। तब कवि को अपनी प्राणप्रिय पत्नी की याद आती है। तब कविता से मन सिहर जाता है। स्मृति में आती है पत्नी की यादें और याद आती है बिसरी बातें। कवि अपनी पत्नी से बहुत प्रेम करते हैं और उनकी यादों के सहारे जीवित है। इसीलिए कहते हैं की स्त्रियां कहीं भी बचा लेती है पुरुषों को।

"आयी हो तुम जीवन में ऐसे

आती है बरखा

जेठ-वैशाख की तेज धूप में जैसे"[23]

कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव की 'लौटते हुए' कविता में अपनी प्राणप्रिय पत्नी से मिलने की बेसब्री को महसूस किया जा सकता है। कवि अपने व्यवसाय जीवन से अवकाश लेकर जब लौट रहे हैं घर की ओर, तब वह सोच रहे थे आज रात वैशाली एक्सप्रेस में बैठकर मैं घर को लौट रहा हूं। लौट रहा हूं तुम्हारे दिनों और अपनी रातों की ओर। कवि की प्रियसी ना जाने इन दिनों किस हाल में होगी। कैसी होगी नहीं जानते। लेकिन कवि को याद है अपनी प्रियसी की कुछ बातें और कुछ सपने जो साथ में बैठकर देखे थे। वैसे भी सपने कहां मरते हैं। बैठ जाते हैं दम भरने के लिए समय के किसी कोने में। इस समय कवि की बस भाग रही है प्रियसी के पुराने शहर की ओर। धीरे-धीरे रात गुजर रही है। और मिलने की बेसब्री बढ़ रही है।

"सोचता हूं बराबर की इस समय

तुम्हारी आंखों में सुबह

और अधरों पर धूप हुई होगी।"[24]

‘उसका होना’ कविता दाम्पत्य जीवन के अकेलेपन में पत्नी का महत्व स्पष्ट करती है। कवि को कई अनजान शहरों में कई बार अकेला रहना पड़ा। तब पत्नी की यादों के सहारे ही जिंदा थे। अकेलेपन के अंधेरे में पत्नी की यादें ही रोशनी की तरह कवि में समाई हुई थी। मन के घने अंधेरे में न जाने किस कोने में खड़ी होके मुस्कुरा रही थी उनकी पत्नी। उनका समूचा वजूद पत्नी की मुस्कान में घुल जाता था। पत्नी के प्रेम के बिना कवि एक वीरान बाजार से प्रतीत होते हैं। कवि अपनी पत्नी प्रेम में इस तरह घुल मिल गए हैं कि जैसे दाल में घुलता है नमक।

“मेरे लिए

उसका होना

मेरा सुख है

उसका प्यार जीवद्रव्य”[25]

‘पहाड़’ नामक कविता में कवि ने फौजी जीवन के दाम्पत्य जीवन को भी व्यक्त किया है। हमारे भारत के फौजी दिन-रात देश की रक्षा करते हैं वैसे ही जैसे यह पहाड़ अपने देश की रक्षा करते हैं। जैसे कि उत्तर भारत के पहाड़। इन पहाड़ों पर युवतियां मौसम के गीत गाती है अपना काम करते हुए। वह गाती है मेरे गांव के पहाड़ कितने सुंदर है। इन दिनों दृश्य कितना मनमोहक है। ऐसे में अगर फौजी प्रिया घर को आ जाए। तो इन युवतियों के दिल में करार आ जाए,जीवन में बाहर आ जाए। फौजी दाम्पत्य जीवन में विरह कुछ ज्यादा ही होता है। ऐसे में फौजियों की पत्नियों की मिलने की बेसब्री को बड़े ही सुंदर ढंग से कविता में चित्रित किया गया है।

दाम्पत्य जीवन में सुख-दुख तो चलता ही रहता है। ये दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। वैसे भी दाम्पत्य जीवन में प्यार भरी लड़ाई और झगड़ा चलता रहता है। लेकिन दो प्यार करने वालों के बीच कभी मौन नहीं आना चाहिए। अगर

दाम्पत्य जीवन में किसी बात को लेकर आपस में नाराजगी हो तो कभी भी मौन नहीं रहना चाहिए। मौन रहने से समस्या अधिक बढ़ जाती है। अच्छा तो यही होगा अगर आपस में किसी बात को लेकर नाराजगी हो तो बातचीत के जरिए हल किया जा सकता है। बातचीत से ही समस्या का समाधान होगा, नई राह मिलेगी। आपसी बातचीत से दुनिया की बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान किया जा सकता है। तो अगर दाम्पत्य जीवन में कोई नाराजगी हो भी जाए तो आपस में बात करके उसे दूर किया जा सकता है। इसी भाव को अभिव्यक्त करती जितेन्द्र श्रीवास्तव की एक कविता 'मौन' है। इस कविता में कवि अपनी प्रियसी को समझाते हैं-

"प्रिये, चुप हो कब से

कुछ तो बोलो

देखो मौन भले होता हो

कभी कभी अच्छा भी

पर रिश्तो में अनचाहा मौन

कौन कहेगा इसको अच्छा!

देखो प्राण मेरी

सब कुछ ठीक है लेकिन

रिश्तो में मौन नहीं।"[26]

दाम्पत्य जीवन में अंतराल तो आता ही है। कभी पत्नी के मायके जाने से तो कभी व्यवसाई कार्य हेतु पत्नी अथवा पति को दूर कहीं दूर किसी दूसरे शहर में अनजान शहर में जाना पड़ता है। इस दौरान एक दूसरे की यादों के सहारे ही जीवन व्यतीत होता है। और जब मिलने की घड़ी करीब आती है तो यह बेसब्री

बढ़ जाती है। भारतीय समाज में अक्सर पुरुषों को गृहस्थी चलाने हेतु पैसे कमाने घर से दूर जाना पड़ता है। तब विरह की स्थिति बन जाती है। बाद में जब छुट्टियां लेकर घर को जाना हो तब मिलन की बेसब्री बढ़ जाती है। कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव भी कई बार व्यवसाई कार्य हेतु अलग-अलग जगह पर जाना हुआ। कभी पिथौरागढ़, कभी धारचूला। जब कभी भी छुट्टियां लेकर घर जाना हुआ। अपनी पत्नी से मिलने की बेकरारी बढ़ जाती है। इसी बेकरारी के भाव को उन्होंने अपनी कविता 'पार करना एक रात को' में व्यक्त किया है। सिर्फ पति को ही नहीं पत्नी को भी इस मिलन की घड़ी का बेताबी से इंतजार रहता है-

"सिर्फ एक रात है

सिर्फ एक रात

जिसे पार कर पहुंच सकता हूं

तुम्हारी बाहों में"[27]

डॉ.भीमराव अंबेडकर तथा उनके सहयोगियों ने हमारे भारत देश को संविधान दिया। इस संविधान में भारत के हर एक पुरुष और महिला को स्वतंत्रता, समानता का अधिकार दिया है। इसी भाव को व्यक्त करती जितेन्द्र श्रीवास्तव की कविता 'जिस शहर का सपना है उसकी आंखों में' है। इस कविता में कवि अपनी प्रियसी के माध्यम से एक ऐसे शहर की कल्पना करते हैं जो शहर उनकी प्रियसी के सपने में आता है। जिसे उसने कभी नहीं देखा खुली आंखों से। जब भी वह बंद करती है अपनी आंखें तो वह शहर आता है उसकी पुतलियों पर। उस शहर में ना जाने कितने पेड़ है शिरीष के, पूरा शहर उस फुल के रस में डूबा है। शिरीष के फूल की खुशबू से पूरा शहर महकता है। यह शहर किसी ईश्वर ने नहीं बनाया। इस शहर में लड़कियां अपनी शर्तों पर जीती है। यह सब देखकर खुशी से झूम उठता है प्रियसी का मन। कवि की प्रियसी खुली आंखों से देखती है आसपास और सोचती है उसे भी ऐसे ही शहर में रहना है। जहां -

"उस शहर में कोई किसी का राजा नहीं

कोई किसी की प्रजा नहीं

कोई किसी के अधिकार में नहीं रहता

कोई किसी पर अत्याचार नहीं करता।"[28]

इस तरह कवि कविता के माध्यम से देश, समाज में और दाम्पत्य जीवन में स्त्री-पुरुष के मध्य समानता का भाव चाहते है। स्त्री और पुरुष एक ही गाड़ी के दो पहिए हैं। जीवन रूपी गाड़ी को अगर अच्छे से चलाना है। तो आपस में समानता जरूरी है। दाम्पत्य जीवन में दोनों का समान महत्व है ।

हम समाज में अक्सर देखते हैं कि प्रेमी युगल की नई-नई शादी होती है। तब जीवन में खुशियों की बहार आ जाती है। जहां भी देखो प्यार ही प्यार दिखता है। शादी के बाद शुरुआती दौर में एक आकर्षण होता है यौनक्रिया का। जैसे-जैसे समय बीतता जाता है यह शारीरिक आकर्षण और प्रेम कम होता जाता है। और एक समय ऐसा भी आता है जब यह प्यार करने वाले प्रेमी जोड़े के बीच लड़ाई और झगड़ा शुरू हो जाते है। यह इसलिए होता है कि वह मात्र शारीरिक आकर्षण था, न की सच्चा प्रेम और न ही आपसी समझदारी। इसी बात को जितेन्द्र श्रीवास्तव अपनी कविता 'फर्क' के द्‌वारा समझाते हैं। कवि की आंखों की जो अलगनी है उस पर आज भी स्मृतियों का वसंत नहीं सुखा है पिछले कई वर्षों से। कवि का अपनी पत्नी के प्रति जो प्रेम है वह आज भी उतना ही तरोताजा है भीगा है जितना शुरुआती दौर में था। उनके जीवन में प्रेम का वसंत कभी नहीं सूखता। सूर्य के धूप से अक्सर सूख जाते हैं तालाब। लेकिन कवि के प्रेमधूप से कभी नहीं सूखता उनके जीवन का वसंत-

"कितना फर्क होता है

सूर्यधूप और प्रेमधूप में।"[29]

जीवन कभी एक सा नहीं रहता। दाम्पत्य जीवन में सुख-दुख चलता ही रहता है। यही जीवन का नित्यक्रम है। वैसे ही दाम्पत्य जीवन में पति या पत्नी कभी स्वस्थ कभी अस्वस्थ हो जाते हैं। ऐसी विकट परिस्थिति में एक दूसरे का साथ देना बहुत महत्वपूर्ण है। आपसी प्यार, एक दूसरे का ख्याल रखना, एक दूसरे का हाथ थामे रखना, जीवन की दुर्गम स्थिति में भी सकारात्मक सोच रखते हुए हस्ते रहना, जीवन को सरल बना देता है आनंददायक बना देता है। यही सकारात्मक सोच पर रचित कवि की कविता 'जितनी हंसी तुम्हारे होठों पर' जीवन में सकारात्मक रहने की प्रेरणा देती है। जीवन में सुख हो या दुख हो, रात हो या फिर दिन वह गुजर ही जाता है इसलिए निराश होने की जरूरत नहीं। कवि ने अपनी पिता की आंखों में कभी निराशारूपी सांझ नहीं देखी। कवि ने अपनी मां को कभी हारते हुए नहीं देखा। उन दुर्दिनो में भी नहीं जब उनके पिता कैंसरग्रस्त थे। अपने जीवन में कवि ने ऐसी विकट परिस्थिति देखी है। कवि एक बार जब किसी बीमारी से अस्वस्थ हो जाते हैं तब उनकी पत्नी चिंताग्रस्त हो जाती है। तब कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव सकारात्मक रूप से सोचने के लिए अपनी पत्नी को कहते हैं वह अपनी पत्नि को समझाते हैं। गौर से देखो अपनी बेटियों को, यह कितनी सुंदर है। कवि और उनकी पत्नी के लिए उनकी बेटियां महज बेटियां नहीं उनकी प्राणशक्तियां है। कवि ने महसूस किया है अपनी बच्चियों की हंसी को जो असरदार बना देती है दवा को भी। कवि अपनी पत्नी को निराश न होने के लिए कहते हैं हौसला रखने के लिए कहते हैं। अपना साथ देने के लिए कहते हैं। कवि का मानना है कि एक दूसरे का साथ देने से, आपसी प्यार से ही जल्दी स्वस्थ हुआ जा सकता है। जीवन में कितनी भी बड़ी मुसीबत क्यों ना आ जाएं। लेकिन सकारात्मक सोच से, खुश रहने से, हंसने से हर एक समस्या का निदान किया जा सकता है। इसलिए कवि अपनी पत्नी से कहते हैं-

"जितनी हंसी तुम्हारे होठों पर

उतनी खुशी हमारे जीवन में।"[30]

जितेन्द्र श्रीवास्तव प्रेम के अनन्य गायक है। उनकी व्यापक ख्याति का एक बड़ा कारण उनकी प्रेम कविताएं भी है। उनकी कविताओं का रसायन प्रेम, परिवार, समाज और राजनीति के गहरे संश्लेषण से तैयार हुआ है। 'बिल्कुल तुम्हारी तरह' के ग्यारह साल बाद उनकी प्रेम कविताओं का यह दूसरा संग्रह प्रकाशित हो रहा है 'जितनी हंसी तुम्हारे होटों पर'। इस संग्रह में 1990 से लेकर 2021 तक की कविताएं संकलित है। प्रेम कविताओं की भीषण अकाल वेला में इस प्राणवान संग्रह का प्रकाशन होना रेगिस्तान में सरोवर मिलने जैसा है। इस संग्रह की कविताएं उम्र की परिधि को लांघते हुए हर उम्र के पाठकों को अपने गहन आकर्षण में बांध लेती है। भाव, भाषा और अभिव्यक्ति का ऐसा अपूर्व संयम अद्‌भुत है।

दो प्रेम करने वालों के बीच और दाम्पत्य जीवन में पति-पत्नी के बीच शारीरिक आकर्षण तो होता ही है परंतु इससे भी महत्वपूर्ण आत्मिक आकर्षण का है। इसलिए कवि अपनी कविता 'मैं तुम्हें प्रेम करता हूं' में अपने भाव को व्यक्त करते हैं हुए कहते हैं कि-

"प्रेम में होती है देह

पर देह के बिना भी होता है प्रेम।"[31]

बिल्कुल सही कहा है कवि ने, दो प्रेम करने वालों के बीच शारीरिक प्रेम के साथ-साथ आत्मीय प्रेम भी होना चाहिए जो दोनों को एक दूसरे से जोड़े रखें। आत्मीय प्रेम के बिना प्रेम का कोई मोल नहीं। प्रेमियों के बीच अथवा दाम्पत्य जीवन में जब जब एक दूसरे से दूरी आती है जीवन में, तब शारीरिक आकर्षण काम नहीं आता। तब प्रेम की वह स्मृतियां, यादें ही हमारे जीने का आधार होती है।

'प्राण वायु की तरह' कविता में कवि अपनी पत्नी से दूर है। कवि का अपनी पत्नी के प्रति प्रेम इतना अनन्य है कि आंख खुलते ही पुतलियों में उभर जाती है पत्नी की तस्वीर। अरावली की एकांकी में पत्नी का साथ होने का भाव कवि को अकेलेपन से बचा लेता है। इस समय कवि को सैकड़ों मील की भौतिक दूरी भी

मिथ्या लगती है। इस अकेलेपन में हवा का पास से गुजरना पत्नी के प्रेम स्पर्श जैसा लगता है-

"देखो, अभी-अभी जो हवा छू कर गई है मुझे

उसमें तुम्हारे स्पर्श की गंध थी

जो समा गई है मेरे नथुनों में प्राणवायु की तरह"[32]

इतने बड़े जीवन में किसी अन्य का साथ यूं ही अच्छा नहीं लगता हमें। अरबों लोगों से भरी पृथ्वी पर हमारा मन किसी के प्रति चुंबक की तरह विज्ञान के नियम की तरह नहीं खींचता। यह तो जीवन के किसी मोड़ पर मिलता है जब कोई अजनबी तब वह अपने प्रेम रंग से छा जाता हैं चेतना पर। जीवन उसी के रंग में रंग जाता है पूरी तरह। कल तक कवि अपना ही रंग खोज रहा था। पर अब जब पत्नी प्रेम का रंग मिला है उन्हे वह रंग उनकी रग-रग में समा गया है-

"ओ मेरी सखी

ओ मेरी रंगरेज

मैं सिर्फ और सिर्फ पहचानता हूं तुम्हारा रंग

तुम्हारा राग।"[33]

कवि को अपनी पत्नी के बिना अपना जीवन बंजर रेगिस्तान की तरह लगता है। अपनी पत्नी से दूर होते हुए भी पत्नी की यादें पत्नी का प्रेम उनके मन के रेगिस्तान को वसंत की तरह सीचकर चला जाता है। पत्नी की याद में कवि के पलकों पर नींद उतर आती है। उनके होंठ बुदबुदा रहे हैं कोई प्रेम प्रार्थना। कवि जब भी आंखें खोलते हैं उन्हें याद आता है उनकी पत्नी का चेहरा। उनका प्यार उनका स्नेह- "जहां पानी है मेरे जीवन का"[34] कवि को जब जब अपने बिखरने का एहसास होता है तब उन्हें अपनी पत्नी की जुल्फों की घनी छांव याद आती

है। जब-जब लड़खड़ाए कवि के पैर तब तब उनकी राहों में उनकी पत्नी की अधूरी मुस्कान की नमी याद आती है। पति-पत्नी के बीच आपसी दूरी के कारण वियोग की स्थिति बनती है। दुख, दर्द, असहनीय पीड़ा की अनुभूति होती है। लेकिन कवि वियोग की स्थिति में भी अपनी पत्नी को हंसने की सलाह देते हैं। कवि का मानना है हमसफर के हंसने में उल्लास है जीवन का, उत्साह है जीवन का, विश्वास है जीवन का। इसलिए कवि अपनी कविता 'हंसो प्रिय' में अपनी प्रियसी को हंसने की सलाह देते हैं-

"हंसो प्रिया, उन्मुक्त हंसो।"[35]

कवि अपनी पत्नी को अपने जीवन का सौभाग्य मानते हैं। इससे पहले उनका जीवन बेरंग अकेलेपन से भरा था। बहुत से लोग मिलते हैं जीवन में, बहुत से लोग बिछड़ते ही जीवन में। परंतु इस मिलने और बिछड़ने के क्रम में कोई एक ऐसा होता है जिसके साथ हम माफ़ सकते हैं जीवन का ओर-छोड़। जो बन जाता है कभी-कभी सांसों की डोर। जैसे कवि के लिए बनी है उनकी पत्नी। कवि ने अपने जीवन में अनेक रंग देखे हैं। लेकिन जो प्रेम का रंग होता है पत्नी के साथ का, वह रंग तो असल रंग है दाम्पत्य जीवन का। पत्नी के जीवन में आने से उनका जीवन खुशियों के रंग से भर गया है। इसलिए कवि कहते हैं-

"वैसे कहो यदि तुम

तो कहूं आज में

कि मेरा सौभाग्य रचा है तुमने।"[36]

दाम्पत्य जीवन में दो शरीर होते हैं लेकिन जान एक होती है। दाम्पत्य जीवन में एक दूसरे के सिवा जीवन खालीपन सा लगता है। पुराणों में अर्धनारीश्वर की बात शायद इसीलिए की गई है कि दो जिस्म मिलकर एक पूरा शरीर बनता है, एक जान बनती है। कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव अपनी कविता 'तुम ही बन गई मेरे फेफड़ों

का ऑक्सीजन' में अपनी पत्नी को अपने जीवन का ऑक्सीजन अर्थात प्राणवायु की उपमा देते हैं। पत्नी के बिना कवि को अपना जीवन और शब्द टूटे हुए से लगते हैं। पत्नी से मिलने के बाद उन्हें अपना जीवन और शब्द जुड़े-जुड़े से लगते हैं। पत्नी के जीवन में आने से उसके स्पर्श से कवि का जो जीवन खालीपन से भरा हुआ था वह खालीपन खुशियों से भर चुका है। अब कवि के मन में एक नया उत्साह है जीवन जीने का, अपनी अर्धांगिनी के साथ। अब कवि को अपनी आंखों में एक नवजीवन सा दिखता है। पत्नी के बिना कवि का जीवन जड़ था, निर्जीव था, हताशा-निराशा से भरपूर था लेकिन जैसे ही जीवन में पत्नी का आगमन होता है उनका जीवन खुशियों से भर जाता है। उनकी पत्नी उनके जीवन में ऑक्सीजन की तरह है। जिनके आने के बाद कवि को नया जीवन मिला है-

"ओ साथी!

तुम ही बन गई मेरे फेफड़ों का ऑक्सीजन

वरना वायुमंडल रीत गया था मेरे लिए"[37]

पति-पत्नी अपने विवाहित जीवन में अपने अपने कामों की वजह से एक दूसरे से चाहे कितना भी दूर क्यों न रहे। पति चाहे अपने व्यवसाय काम से किसी दूसरे शहर में क्यों न चला जाए और पत्नी अपना घर संभालती हुई अपने कर्तव्यों का निर्वाह करती है। पति के बिना भी पत्नी घर का पूरा काम पूरी तन्मयता से करती है। बच्चों और घर के बड़ों की सेवा करना तथा घर को हंसता- खेलता रखना यह आसान नहीं होता जब पति पास न हो। इस दूरी के बीच में एक दूसरे का कहीं आसपास होने का भाव ही मन में उत्साह और चमक भर देता है। इस दूरी के बीच भी एक दूसरे से कभी न कभी मिलने का भाव ही दाम्पत्य जीवन को जिंदा रखता है-

“श्रम से लथपथ देह तुम्हारी मन कंचन सा दमके

दिन की आपाधापी में प्रेम चंचल सा चमके

तुम हो तो घर सचमुच घर है हंसता और हंसाता

मैं रहूं कहीं पर तेरा होना ही मुझ में चमके”[38]

शादीशुदा जीवन में या प्रेम में कभी भी प्रेमियों के हृदय में और मन में अस्पष्टता, अपारदर्शिता नहीं होनी चाहिए। प्रेम का मार्ग ही सीधा और सच्चा होता है। जिसमें आत्मसमर्पण होता है। इसी बात को कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव अपनी कविता ‘जितना बुरा होता है’ में व्यक्त करते हैं। कवि का मानना है जितना बुरा होता है प्रेम में पहरा इतना ही बुरा होता है प्रेम में कोहरा। प्रेम में जितने बंधन होते हैं, मन उतना ही विद्रोही हो जाता है। प्रेम के आसमान को होना चाहिए सुबह के आसमान की तरह। बिल्कुल सपनों के रंग जैसा। प्रेम को होना चाहिए मानसरोवर के पानी के समान बिल्कुल पारदर्शी। जिसमें छिपाया ना जा सके कुछ भी। इसीलिए रीतिकाल के कवि धनानंद ने भी कहा है- ‘प्रेमको मार्ग बढ़ो सीधो, जहां नेकू सयापन बांक नहीं।’

दो प्रेम करने वालों के बीच एक हंसी ही होती है। जिससे जीवन में एक नया उत्साह और नया प्राणवायु बहता है। दाम्पत्य जीवन में हंसी के महत्व को कवि ने अपनी कविता ‘तुम्हारी हंसी’ के द्वारा अपनी पत्नी की मुस्कुराहट को अपने जीवन की उजासरूपी औषधि कहां है। कवि जब अपनी पत्नी को मुस्कुराता हुआ देखते हैं तब उनके जीवन की ऋतु बदल जाती है। पत्नी की हंसी में उनका हर दिन वसंत के दिनों की तरह है। इस हंसी के कारण ही कवि ने अपनी पत्नी को और खुद को कभी पहचाना था। कवि का जीवन यायावरी था। अध्यापन के लिए उन्हें अलग-अलग शहरों में जाना पड़ा। यायावरी में ही उनकी आत्मा बसती थी। लेकिन पत्नी की हंसी में अब कवि को किसी और राह की चाह ही नहीं रही। कवि अब पत्नी की हंसी में ही जीवन की उजास को देखते हैं और उसमें स्थाई

हो गए। प्रयोगवादी कवियों की तरह कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव की अपनी पत्नी के सौंदर्य को नई उपमा देते हैं-

"नील- नभ सा परिधान

तुम्हारा सौंदर्य

जैसे खेतों में झूमते धान

अब और कहीं नहीं

बस तुम्हीं में बसते हैं मेरे प्राण"[39]

एक पुरुष के जीवन में एक स्त्री का बहुत महत्व होता है। विवाह से पूर्व एक पुरुष मात्र पुरुष होता है विवाह के बाद पत्नी प्रेम ही एक पुरुष को आदर्श मनुष्य बनाता है। पत्नी के बिना पति अधूरा है और पति के बिना भी एक पत्नी का जीवन अपूर्ण है। दो आधे-अधूरे मिलकर ही जीवन को संपूर्ण बनाते है। कवि ने अपने जीवन में अपनी पत्नी की उपस्थिति को 'बस एक तुम्हारी उपस्थिति' नामक कविता में बड़े ही सुंदर रूप से व्यक्त किया है। पत्नी के जीवन में होने से नूर बरसता है पति के जीवन में। पुरुष का जीवन पत्नी की उपस्थिति के कारण सहज, सरल और सुखमय हो जाता है। मन मुलायम हो जाता है गुलाब की पंखुड़ी सा। झर जाते हैं अवांछित काटे। जब पत्नी मुस्कुराती है तो जीवन में सहजता, सरलता आ जाती है और सारे कष्ट तिरोहित हो जाते हैं। सारी थकान और समस्याएं दूर हो जाती है। जीवन में एक नई ऊर्जा और सकारात्मक भाव पैदा होता है। पत्नी की मुस्कान घोर अंधेरे में आशा की एक किरण और उजास के रूप में दिखाई देती है। जिससे जीवन की हर एक समस्या से लड़ने की शक्ति पुरुष को मिलती है। एक पुरुष के जीवन में कई सारी समस्याएं होती है जैसे कि आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि समस्याओं में पत्नी का साथ और उसकी उपस्थिति ही एक पति को उन समस्याओं से निजात दिलाती है। एक

पुरुष शादी से पहले एक पुरुष ही होता है लेकिन एक सहज सरल मनुष्य का जन्म शादी के बाद ही होता है पत्नी के साथ से। इसीलिए कवि कहते हैं-

"तुमको तो खबर भी नहीं

कि बस एक तुम्हारी उपस्थिति ने

मुझे पुरुष से बना दिया मनुष्य।"[40]

पति-पत्नी के बीच या फिर दो प्रेमियों के बीच भाव की अभिव्यक्ति या प्रेम की अभिव्यक्ति सिर्फ लिखित और मौखिक रूप में ही नहीं होती। आंखों की सांकेतिक अभिव्यक्ति से भी अपने प्रेम भावनाओं को अभिव्यक्त किया जा सकता है। बहुत दिनों से पत्नी से दूर रहने के बाद जब कवि अपनी पत्नी से मिलते हैं तब उनके मन उड़ते हैं, जुड़ते हैं, खिलते हैं, मिलते हैं। एक दूसरे को निहार कर ही अपने प्रेम की अभिव्यक्ति करते हैं-

"अकथ सुख है उनके साथ रहना

बस सुनना न कुछ कहना।"[41]

कवि ने अपने व्यवसाई जीवन के दौरान कई बार अलग-अलग शहरों में अलग-अलग जगह पर रहना हुआ जैसे कि पिथौरागढ़, धारचूला, बबनाम। कई साल पत्नी और बच्चों के बीना गुजारना आसान नहीं होता। पत्नी और बच्चों की याद ही उनमें प्राणवायु की तरह है। जो कभी उन्हें हारने और थकने नहीं देता। उनकी आंखों की पुतलियों में उनकी पत्नी और बच्चों की तस्वीर छपी है। जो उन्हें जीवित रखती है। उनकी पत्नी उनसे कई दूर किसी क्वार्टर में बच्चों को संभाले हुए है और कवि यहां उनकी यादों के सहारे जिंदा है। पत्नी और बच्चों की यादें उनकी सुबह की प्रार्थना सी है। पत्नी के जीवन में होने से हर मौसम वसंत की तरह लगता है कवि को। पत्नी के साथ से जीवन में हर दिन खुशियों से भरा-भरा लगता है। आंखों में जब पत्नी की छवियां होती है तब दृष्टि में भी रश्मिया

दिखती है। पत्नि के होने से जीवन में हर दिन सुबह, शाम, दोपहर मन फुलवारी सा लगता है। सुबह की प्रार्थना में शीतलता आती है और खो जाती है कवि के जीवन की विकलिता। एक दूसरे के साथ से जीवन सुसंगठित हो जाता है किसी छंद की तरह। फिर जीवन में कुछ भी नहीं रहता पहले जैसा।

सांसारिक जीवन में दाम्पत्य जीवन में विरह की स्थिति का आना स्वाभाविक बात है। यह विरह की स्थिति अत्यंत पीड़ादायक होती है। इस विरह की स्थिति में हर मौसम पीड़ादायक लगता है। कवि अपने पत्नी बिछड़न की पीड़ा को अपनी कविता 'कि हिलता हिया' में अभिव्यक्ति किया है। पत्नी प्रेम के बिना कवि बेचैन होते हैं। करवट बदलते ही उनका ह्रदय पीड़ा से हिल जाता है पत्नी की याद में। पत्नी वियोग में पहाड़ों पर जंगल में मैना भी अपने साथी की खोज में भटकती सी लगती है। शीत के मौसम में आती ठंडी हवा कवि की प्रीति की पीड़ा को अधिक प्रज्वलित कर देती है-

"शीत मौसम से

प्रीति की ओर आती

कि हिलता हिया।"[42]

आधुनिक दाम्पत्य जीवन में एक पति के लिए अपनी गृहस्थी चलाने के लिए घर से बाहर जाकर काम करना आसान नहीं होता उसी तरह एक पत्नी के लिए पूरे घर की जिम्मेदारी को संभालना भी आसान नहीं है। पत्नी होना भी आसान नहीं है। सुबह जल्दी उठना पति को दफ्तर जाने के लिए तैयार करना, चाय बनाना, गरम पानी करना, पति के कपड़े प्रेस करना, बच्चों को अच्छे संस्कार देना उनका पालन-पोषण करना और उनको स्कूल जाने के लिए तैयार करना। घर का पूरा काम करना और बाहर जाकर नौकरी करना यह आज आधुनिक पत्नी की कहानी है। इसी बात को कवि भली-भांति जानते हैं। पत्नी की महत्ता को अपने जीवन में प्रतिपादित करते हुए कवि 'मन की सांस' कविता में अपने भावो व्यक्त करते हैं।

कवि की पत्नी पूरे दिन गृहकार्य में व्यस्त रहती है। कवि चाहते हैं की आज उनकी पत्नी सारे घर के कार्य को भूल कर उनके साथ नौका विहार को चले। दाम्पत्य जीवन में सिर्फ जिम्मेदारियां और कर्तव्य ही नहीं होते। कवि का मानना है कि कुछ क्षण खुद के लिए और एक दूसरे के साथ भी व्यतीत करने चाहिए। कवि की पत्नी सुबह से शाम तक खड़ी रहती है एक पाव पर संभालते हुए घर का पूरा ब्रह्मांड। पूरे घर की जिम्मेदारी पत्नी पर रहती है। पत्नी का जरा सा हिलने पर कवि को लगता है कि घर की पृथ्वी हिल गई है। पत्नी के अस्वस्थ होने पर हिल जाती है दीवारें घर की। हिल जाता है कवि का परिवार। लेकिन कवि की पत्नी ऐसे मुश्किल समय में भी खुद को ठीक करके मुस्कुराती है और कवि और उनका परिवार निश्चिंत हो जाता है। कवि की पत्नी ने कभी भी नहीं कहा अपना दुख और कवि भी नहीं समझ पाए पत्नी का दुख क्योंकि एक स्त्री को समझना आसान नहीं। यह बात कवि भी जानते हैं और कवि यह भी जानते हैं कि उनकी पत्नी कभी भी नहीं कहेगी अपना दुख। कवि आज अपनी पत्नी को अपने पारिवारिक जिम्मेदारियों को बुलाकर कुछ क्षण के लिए आज नौका विहार को ले जाने के लिए तत्पर है। जिससे कुछ समय के लिए ही सही दाम्पत्य जीवन में खुशियों का संचार तो होगा।

व्याकरण में एक छंद होता है अनुष्टुप। इस छंद की यह विशेषता है कि इसके चारों चरणों में 8-8 अक्षर होते हैं। यानी सब कुछ बराबर होता है हर एक चरण में। लेकिन जीवन में सब कुछ बराबर नहीं होता। कभी सुख तो कभी दुख, कभी मिलना तो कभी बिछड़ना, कभी लाभ तो कभी हानि चलता रहता है। एक अकेले पुरुष का जीवन एक स्त्री के बिना आधा-अधूरा है लेकिन जैसे ही एक स्त्री का जीवन में आगमन होता है जीवन संपूर्ण हो जाता है जीवन अनुष्टुप छंद की तरह हो जाता है यानी सब कुछ बराबर हो जाता है सही हो जाता है जीवन में सब कुछ। 'जीवन अनुष्टुप छंद हो गया है' इस कविता में कवि ने पत्नी के जीवन में आने के बाद क्या परिवर्तन हुआ है इसका वर्णन बखूबी रूप से किया है। कवि

को लगता है जबसे पत्नी जीवन में आई है हर खोई हुई राह मिलती चली गई, अनजान इलाकों और अंधेरों में भी, जिसे कवि ने छोड़ दिया था कभी असंभव मानकर जीवन में वह अचानक संभव और सहज लगने लगा है पत्नी के साथ से-

"बेसबब भटकना बंद हो गया मेरा

जीवन अनुष्टुप छंद हो गया मेरा।"[43]

दाम्पत्य जीवन से पूर्व जब प्रेमी-प्रेमिका एक-दूसरे को पहली बार देखते हैं तब वह पहली बार देखा हुआ एक-दूसरे का चेहरा कभी नहीं भूलते आजीवन। वह प्रेम की पहेली छवि आजीवन ह्रदय में संग्रहित रहती है। कवि को भी अपनी पत्नी से पहली बार मिले हुए कई वर्ष बीत चुके हैं और उनके सुखमय दाम्पत्य जीवन को आज 20 साल से ऊपर हो चुका है। फिर भी कवि को लगता है जैसे कि कल ही तो मिले थे हम। कवि की यादों में अपनी पत्नी का पहली बार देखा हुआ चेहरा जस का तस है। पत्नी की पहली मुस्कान की छवि आज भी उनके ह्रदय में विद्‍यमान है। 20 वर्ष एक दूसरे का साथ निभाने के बाद जानते हैं, पहचानते है एक- दूसरे के तन-मन की हर रेखा को। फिर भी कवि जब भी अपनी पत्नी को निहारते हैं तब जो पहली बार देखा था बीते नवंबर की सुबह की धूप सा चेहरा लगता है। दाम्पत्य जीवन की बहुत बड़ी बात है कि पहली बार जब एक- दूसरे को देखा होगा उस समय की बातें, उस समय के हाव-भाव की छबी को आजीवन अपने ह्रदय में स्थान देना और याद रखना। उस क्षण को याद करके एक-दूसरे की आंखों में खो जाना यही तो दाम्पत्य जीवन का सुख है।

विवाहित जीवन में एक- दूसरे का साथ ही एक- दूसरे के आधे-अधूरेपन को पूरा करता है। 'बिना तुम्हारी उपस्थिति के' कविता में कवि ने पत्नी की उपस्थिति के महत्व को उजागर किया है। पत्नी के अनुपस्थिति में कवि चाहकर भी चित्त को स्थिर नहीं कर पाते। कवि न लिख पाते है कोई पूरा वाक्य, न बना पाता हैं कोई

पूरा चित्र। विवाहित जीवन में एक- दूसरे का साथ ही जीवन है पूर्णता है। इसीलिए कवि कहते हैं-

“सच कहता हूं

अनुभव की अग्नि में तपा हुआ

कि संभव नहीं है कोई भी पूर्णता इस जीवन में

बिना तुम्हारी उपस्थिति के।”[44]

‘अमृत है तुम्हारा साथ’ कविता में कवि ने पत्नि के साथ को अमृत कहा है। कई महीने बीतने के बाद जब कवि अपनी पत्नी से मिलते हैं तो उन्हें लगता है वह लौट आए हैं उजाले में किसी उज्जास से भरे जीवन में, जहां प्यार ही प्यार है। कवि अपनी पत्नी से उनका साथ चाहते हैं और चाहते हैं कि पत्नी का हाथ उनके कंधों पर सदा रहे एक विश्वास के साथ। पत्नी के साथ होने से जीवन जीने का आत्मविश्वास भी बढ़ता है। इसीलिए कवि को पत्नी का साथ अमृत की तरह लगता है।

‘प्रिये! मैं नहीं चाहता होना उऋण’ कविता में भी कवि अपनी पत्नी का जीवन भर साथ चाहते हैं उन्हें लगता है कि पत्नी के बिना उनके जीवन का कोई महत्व नहीं-

“तुम नहीं जानती अपने होने का अर्थ

तुम नहीं होती तो मेरा जीवन हो जाता व्यर्थ”[45]

आज 21वीं सदी में भारत में कई लोग गरीबी में जी रहे हैं। गरीबी में दाम्पत्य जीवन का निर्वाह करना बड़ा ही कठिन कार्य है। गरीबी में दाम्पत्य जीवन का निर्वाह करना एक स्त्री के लिए नर्क जैसा जीवन जीना है। ऐसे में स्त्री के लिए मजदूरी करके घर चलाना, बच्चों का लालन-पालन करना ऊपर से जीवन साथी

अयोग्य मिल जाए तो जीवन बड़ी कठिनाई में कट्टा है। कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव अपनी कविताओं के माध्यम से केवल सुखमय दाम्पत्य जीवन का ही वर्णन नहीं करते। वह उन गरीब मजदूर, बेबस स्त्रियों की वाणी को भी अभिव्यक्त करते हैं। उनकी कविता 'जो विधाता स्त्री होता' में भारतीय गरीब दाम्पत्य जीवन को व्यक्त किया है। गरीब घर की स्त्रियां मुंह अंधेरे निकलती हैं दोपहर का भोजन लेकर और पूरा दिन मजदूरी करने के बाद लौटती है सांझ को अपने घर। घर लौट कर सजल आंखों से निहारती अपने बच्चों को जो सो चुके होते हैं बिना किसी थपकी और लोरी सुने। वह स्त्री अपने को संभालती चुपचाप घुसती है रसोई घर में, उनकी पूरी सावधानी के बाद भी खरखड़ा ही जाते हैं बर्तन और जागी ही जाते है भूखे बच्चे। मां को देखकर बढ़ जाती उनकी भूख ओर भी ज्यादा। जैसे बरसाती नालों की तरह। वे पुचकारती उन्हें खिलाते हुए साग और रोटी। उस समय सहज नहीं होता उनके भीतर की हलचल को जानना। जब पति को खिलाती हुई रोटियां। उसे खानी पड़ती है गालियां। बच्चों और पति को सोते- सोते रात बीत जाती है दो घड़ी। वे गरीब स्त्रियां कभी रोपती है धान, कभी काटती है गेहूं, कभी करती है सोहनी। कभी उठाती है गारा-माटी। और कभी-कभी बिलखती है सखियों संग अपने होने को लेकर। नर्क से बदतर जीवन जीने पर भी वे जब करती है भाग्य की बात तो हंसती है विधाता पर, कभी कोसती ही विधाता को और कहती हैं-

"जो विधाता स्त्री होता

तो सोचो सखी

कैसा होता"[46]

आसान नहीं होता गरीबी में दाम्पत्य जीवन का निर्वाह करना, बच्चों का पालन-पोषण करना और अयोग्य पति को संभालना। भारत में अधिकांश महिलाएं इसी तरह का जीवन जी रही है। अगर विधाता स्त्री होता तब जाकर इन गरीब स्त्रियों की मनोदशा को समझ पाता।

दाम्पत्य जीवन तब खुशियों से भर जाता है जब जीवन साथी आपके अनुकूल हो, जो आप को समझता हो, आपका अच्छा सहयोगी हो, जानता हो अपनी सीमा और अपनी जीवनसाथी की भी। आपस में प्यार हो, समझदारी हो, सम्मान हो। तब दाम्पत्य जीवन वसंत की ऋतु की तरह खिल जाता है। एक अपनी परिचित लड़की को जब एक अच्छा जीवनसाथी मिलता है ऐसा जानने के बाद कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव फूले नहीं समाते। खुशी के मारे कवि को नीम के पत्ते भी मीठे लगते हैं। वह सोचते हैं-

"चलो खुश तो है एक बेटी किसी की

और भी होगी धीरे-धीरे।"[47]

दाम्पत्य जीवन में सिंदूर का काफी महत्व है। सिंदूर से भरी मांग के बिना अपशकुन मानती है स्त्रियां। सिंदूर से दिप-दिपता है सुहागन का चेहरा। सिंदूर न हो मांग में तो राख हो जाती है स्त्री की आभा। इन मान्यताओं के विरुद्ध कवि सोचते हैं विवाह तो पुरुष का भी होता है। पर वह रह जाता है जैसा का तैसा। उसके लिए कोई प्रतीक निर्धारित नहीं हमारी परंपरा में। लोगों का मानना है पुरुष को अलग से कुछ धारण करने की जरूरत नहीं होती। पुरुष प्रतीक है स्वयं और प्रतीक नहीं धारण करते प्रतीक। यहां लोगों की मान्यता कवि को स्वीकृत नहीं है। कवि तर्कपूर्ण तरीके से सोचते हैं और कवि भारतीय अंधविश्वासी परंपराओं का विरोध करते हुए कहते हैं-

"सिंदूर भय है स्त्री का

सोचता हूं

जो डर अनादिकाल से

घुला हुआ है

रक्त मज्जा विवेक में

वह कैसे निकलेगा

मीठी मीठी बातों

और छोटे-छोटे स्वार्थों से।"[48]

दाम्पत्य जीवन तब खुशियों से भर जाता है जब परिवार में बच्चों का जन्म होता है। दाम्पत्य जीवन बच्चों के बिना आधा-अधूरा है। परिवार में बच्चों का जन्म होना परिवार को खुशियों से भर देता है। एक स्त्री तब पूर्ण स्त्री बनती है जब वह मां बनती है। और एक पुरुष पिता बनने के बाद ही एक सहज, सरल मनुष्य बनता है। परिवार में बच्चों के आने से परिवार की खुशियों को चार-चांद लग जाते हैं। पुराणों में जैसे माता यशोदा और नंद बालकृष्ण की नटखट भाव-भंगिमा, वेशभूषा और बालकीड़ाओं को देखकर वात्सल्य रस में डूब जाते थे। वैसे जितेन्द्र श्रीवास्तव और उनकी अर्धांगिनी उनकी बेटियों को शरारत करते हुए देखते और तुतलाती आवाज में कोई संवाद सुनते हैं, चुपचाप से अपनी बेटियों को देखते हैं। तब आंखें भर जाती है रोशनी से और तरल हो उठती है उनकी आत्माएं।

परिवर्तन जीवन का नियम है, जीवन में यह परिवर्तन निरंतर चलता है। आजादी के बाद भारतीय समाज भी परिवर्तित रूप में प्रस्तुत हुआ है। परंपरागत मूल्य, मान्यताएं बदलकर नए मापदंड स्थापित हुए हैं। जहां एक तरफ परंपरागतरूप से चल रहे संयुक्त परिवारों का विघटन हो रहा है। वहीं दूसरी तरफ सामाजिक और पारिवारिक संबंधों में परंपरागत रूप में भी काफी परिवर्तन आ रहा है। दाम्पत्य जीवन भी इस परिवर्तन से दूर नहीं रहा है। सफल दाम्पत्य जीवन के जो संस्कार पूर्वर्ती समाज में थे उनमें भी काफी परिवर्तन आ गया है। पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव के कारण भारतीय दाम्पत्य जीवन भी अपनी वास्तविक पहचान खोकर नए चेहरे के साथ उभरकर हमारे सामने आया है। इस परिवर्तन के कारण परिवार और दाम्पत्य जीवन के मूल्य टूटने लगे हैं।

भारतीय परंपरागत धारणा और संस्कृति के अनुसार विवाह आत्माओं का एक पवित्र मिलन है, जन्मों का संबंध तथा स्त्री-पुरुष का पवित्र बंधन माना जाता है। परंतु आज आधुनिक समाज में विवाह की यह परंपरागत मान्यताएं निरर्थक और अर्थहीन होती जा रही है। पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव से पति-पत्नी के विचारों में परिवर्तन आया है। दाम्पत्य जीवन के प्रति पति-पत्नी का दृष्टिकोण बदल रहा है।

एक पत्नी अपने पति को देवता के रूप में नहीं परंतु एक अच्छे जीवनसाथी के रूप में देखना चाहती है। आजादी के बाद मोहभंग होने के कारण पति-पत्नी के संबंधों में परिवर्तन हुआ है। एक ऐसा भी समय था जब विवाह धार्मिक पवित्र बंधन समझा जाता था हमारे यहां। एक पत्नी अपने पति के अनाचार सहकर पतिपारायण बनी रही थी। वर्तमान में स्त्री अपने अधिकारों के प्रति सचेत है। वर्तमान में स्त्रियां कानूनी तरीके से सुरक्षित एवं आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र है। पत्नी पति के अहम भाव के कारण दाम्पत्य जीवन के सामने प्रश्न चिन्ह लग गया है। पति पत्नी के लिए अब पौराणिक मूल्य टूटने लगे हैं। जैसे कि हिंदी साहित्य में मोहन राकेश के नाटक 'आधे-अधूरे' और मन्नू भंडारी के उपन्यास 'आपका बंटी' में दर्शाया गया है।

एक स्वस्थ दाम्पत्य जीवन एक सुखी परिवार की नींव है। वर्तमान समय में औद्योगिकरण, शहरीकरण, आधुनिकरण और यांत्रिकता के कारण पति-पत्नी दोनों को अर्थाजन करना पड़ता है। पत्नी या पति का नौकरी के लिए बाहर जाना और अन्य पुरुष और स्त्री के संपर्क में आने से पति-पत्नी के बीच शक पैदा हो जाता है। वह दोनों एक दूसरे के लिए समय भी नहीं निकाल पाते और थक कर चूर हो जाते हैं। परिणाम स्वरुप पति-पत्नी के बीच अलगाव बढ़ता है। इसीलिए पति-पत्नी को एक दूसरे पर विश्वास करना और ईमानदार रहना। आपस में प्यार से बातें करना और कुछ समय खुद के लिए निकालना बहुत जरूरी है।

आज की आधुनिक नारी भौतिक सुख और संपन्नता नहीं चाहती। एक वह भी समय था जब नारी गुड़िया बनकर पुरुष की पत्नी बन जाना पसंद करती थी। परंतु आज के आधुनिक नारी केवल गुड़िया नहीं बनना चाहती। आज वह सुख साधन और संपन्नता से अधिक एक पुरुष का भावात्मक और शारीरिक सहचार्य भी चाहती है। अर्थात आज की नारी पति नहीं एक अच्छा जीवन साथी, एक अच्छा मित्र चाहती है जो उसे समझे, सम्मान दें, प्यार करें और उसकी भावनाओं को समझें।

जितेन्द्र श्रीवास्तव की दाम्पत्य जीवन पर आधारित कविताएं दाम्पत्य जीवन को सफल बनाने के लिए एक औषधि का कार्य करती है। जिसे पढ़कर हर एक भारतीय दाम्पत्य जीवन को सही अर्थों में समझ पाएगा। वह समझ पाएगा की पति-पत्नी का संबंध केवल शारीरिक नहीं आत्मिक भी है, दाम्पत्य जीवन में एक दूसरे को समझना, एक दूसरे के मन के भाव को समझना, एक दूसरे को मान देना, सम्मान देना काफी जरूरी है। जितेन्द्र श्रीवास्तव ने अपनी कविता में अपनी पत्नी अपने बच्चों को अपने जीवन का प्राणवायु और अपने जीवन की उजास कहां है। दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने के अनेक गुण जितेन्द्र श्रीवास्तव की कविताओं में है जिसे हर एक शादीशुदा पुरुष और महिला को पढ़ना चाहिए। जिसे पढ़कर अपने दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाया जा सकें।

संदर्भ

1. जितेन्द्र श्रीवास्तव, बिल्कुल तुम्हारी तरह,पृ.73
2. वही, पृ.11
3. वही, पृ.96
4. जितेन्द्र श्रीवास्तव, असुंदर-सुंदर, पृ.114
5. वही, पृ.69
6. जितेन्द्र श्रीवास्तव, बिल्कुल तुम्हारी तरह, पृ.62
7. वही, पृ.62-63
8. वही
9. वही, पृ.25
10. वही, पृ.24-25
11. वही, पृ.69
12. वही, पृ.70
13. वही, पृ.64
14. वही, पृ.91
15. वही, पृ.57-58
16. वही, पृ.32
17. वही, पृ.87
18. वही, पृ.9-10
19. वही, पृ.12
20. वही, पृ.14
21. वही, पृ.16
22. वही, पृ.22
23. वही, पृ.49
24. वही, पृ.55

25. वही, पृ.58
26. वही, पृ.79
27. वही, पृ.80
28. वही, पृ.81
29. वही, पृ.92
30. वही, पृ.96
31. जितेन्द्र श्रीवास्तव, जितनी हंसी तुम्हारे होठों पर,पृ.11
32. वही, पृ.28
33. वही, पृ.30
34. वही, पृ.32
35. वही, पृ.46
36. वही, पृ.52
37. वही, पृ.67
38. वही, पृ.68
39. वही, पृ.106
40. वही, पृ.109
41. वही, पृ.130
42. वही, पृ.145
43. वही, पृ.151
44. वही, पृ.154
45. वही, पृ.158
46. जितेन्द्र श्रीवास्तव, स्त्रियां कहीं भी बचा लेती है पुरुषों को,पृ.71
47. वही, पृ.80
48. वही, पृ.86